



NEERAJ®

हिंदी साहित्य : विविध विधाएं

B.H.D.L.A.-138

B.A. General - 4th Semester

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the “Special Discount Schemes” being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay “Cash on Delivery” (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिन्दी साहित्य : विविध विधाएँ

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-4
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-5

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	कहानी : पूस की रात (प्रेमचंद)	1
2.	व्यंग्य निबंध : वैष्णव की फिसलन (हरिशंकर परसाई)	16
3.	एकांकी : बहुत बड़ा सवाल (मोहन राकेश)	24
4.	निबंध : जीने की कला (महादेवी वर्मा)	47
5.	आत्मकथा : जूठन (ओमप्रकाश वाल्मीकि)	58
6.	कविताएं	73
7.	डायरी (मोहन राकेश की डायरी)	88
8.	पत्र-साहित्य	97

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
9.	रिपोर्ताज (एकलव्य के नोट्स).....	106
10.	यात्रा-वृत्तांत (तिब्बत : ल्हासा से उत्तर की ओर)	118
11.	जीवनी (निराला की साहित्य साधना)	136
12.	संस्मरण (महादेवी वर्मा)	150



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिन्दी साहित्य : विविध विधाएँ

B.H.D.L.A.-138

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड से उत्तर देना अनिवार्य है।

खण्ड-क

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. खेत नष्ट को जाने पर भी हल्कू प्रसन्नता व्यक्त करता है, जो कारण हल्कू की प्रसन्नता में व्यक्त हो रहे हैं, उन कारणों को समझाइए।

उत्तर—‘पूस की रात’ कहानी किसान-जीवन से संबंधित है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि किस तरह कठोर परिश्रम के बावजूद किसान हमेशा अभावों से घिरा रहता है और कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता। लगातार शोषण से उत्पीड़ित किसान की आस्था किसानों से डगमगा जाती

इसे भी देखें—संदर्भ—अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 10

प्रश्न 2. हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक शैली की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, प्रश्न 2

इसे भी देखें—हरिशंकर परसाई एक प्रसिद्ध हिंदी व्यंग्यकार और हास्यकार थे, जो समकालीन भारतीय समाज पर अपनी तीक्ष्ण और व्यावहारिक टिप्पणी के लिए जाने जाते हैं। 1924 में इटारसी के पास जमानी, मध्य प्रदेश में जन्मे, परसाई ने पूर्णकालिक लेखन में जाने से पहले एक स्कूली शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। परसाई जी की रचनाओं ने अक्सर भारतीय राजनीति, नौकरशाही और सामाजिक रीति-रिवाजों के पाखंडों और बेहूदगी का मजाक उड़ाया। उनकी लेखन शैली की विशेषता इसकी सरलता और प्रत्यक्षता थी, जिसमें अक्सर बोलचाल की भाषा का उपयोग किया जाता था और अपने संदेश को व्यक्त करने के लिए खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया जाता था।

उन्हें विडंबना और कटाक्ष के उपयोग के लिए भी जाना जाता था, जिसे उन्होंने अपने व्यंग्य में बहुत शामिल किया।

परसाई की सबसे प्रसिद्ध विधाओं में ‘व्यंग्य लेख’ और ‘परसाई की कहानियाँ’ संग्रह आदि शामिल हैं। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए कई सम्मान और पुरस्कार अर्जित किए। उनकी विरासत लेखकों और पाठकों की पीढ़ियों को प्रेरित करती है, आधुनिक हिंदी साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण शिखरियों में से एक के रूप में उनकी जगह को मजबूत करती है।

हरिशंकर परसाई जी की रचनाओं में शैली की विविधता दिखाई पड़ती है। शैली के जो विविध रूप इनकी व्यंग्य रचनाओं में दिखाई पड़ते हैं उनमें से प्रमुख निम्न प्रकार हैं—

1. व्यंग्यात्मक शैली—व्यंग्यपूर्ण रचनाओं में इस शैली का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है। इसमें जीवन के विविध क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर करारी चोट की गई है। भाषा अवसर के अनुकूल सरल, व्यावहारिक है तथा वाक्य छोटे-छोटे हैं। लाक्षणिक पदावली एवं व्यंजना शक्ति का उपयोग भी उन्होंने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में किया है।

उदाहरण—‘सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तुफान की तरह कमरे में घुसे रसाइक्लोनर की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गई।

2. प्रश्नात्मक शैली—प्रश्नात्मक शैली में हरिशंकर परसाई जी प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं और फिर स्वयं ही उनका उत्तर भी देते हैं। ऐसे प्रश्न पाठक को भीतर तक झकझोर देते हैं और सोचने-विचारने को मजबूर कर देते हैं।

उदाहरण—उससे क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेटकर कलेजे से लगा लिया? हरगिज नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ।

3. विवेचनात्मक शैली—हरिशंकर परसाई जी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में कहीं-कहीं वर्णन विवेचन भी किया है। ऐसे स्थलों पर भाषा में गम्भीरता है, संस्कृतनिष्ठ पदावली का प्रयोग है तथा वाक्य छोटे-छोटे किन्तु कसे हुए हैं।

उदाहरण—निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है।

4. सूत्रात्मक शैली—इस शैली में हरिशंकर परसाई गागर में सागर भरते हुए सूत्रों में बात कहते हैं और फिर उसकी व्याख्या करते हैं। परसाई जी के निबन्ध निन्दा रस में प्रयुक्त कुछ ऐसे सूत्र वाक्य इस प्रकार हैं—

2 / NEERAJ : हिन्दी साहित्य : विविध विधाएँ (JUNE-2023)

कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है।

5. **भावात्मक शैली**—जहां कहीं हरिशंकर परसाई जीवन के कटु यथार्थ को व्यक्त करते हैं वहां उनकी भावना प्रबल हो जाती है और वे भावात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। ऐसे स्थलों पर चिन्तन गौण हो जाता है, भावना प्रबल हो उठती है। वाक्य छोटे-छोटे तथा भाषा सरल एवं व्यावहारिक रहती है।

प्रश्न 3. 'डायरी' विधा का 'आत्मकथा' और 'संस्मरण' विधा से अंतर बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-7, पृष्ठ-92, प्रश्न 1

प्रश्न 4. 'निराला की साहित्य साधना' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-11, पृष्ठ-145, 'प्रतिपाद्य'

खण्ड-ख

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. सूरदास के काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-6, पृष्ठ-74, 'प्रतिपाद्य'

प्रश्न 6. 'जीने की कला' निबंध के विचार पक्ष को रेखांकित कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-4, पृष्ठ-50, 'विचार पक्ष'

प्रश्न 7. तुलसी के 'रामराज्य' की विशेषताएं बताइए।

उत्तर—मध्यकालीन भारतवर्ष में सामन्तवाद के पतन के साथ-साथ हिंदू धर्म में भी जकड़बंदी, सड़ांध, गतिरोध और दुर्निवार बुराइयों के लक्षण प्रकट हो रहे थे। पुरानी व्यवस्था के पंडितों ने वेद-वेदांत, पुराण, स्मृति और धर्मशास्त्र के नये-नये भाष्य प्रस्तुत कर मरणोन्मुख व्यवस्था को पुनर्जीवित करने और बचाने का प्रयास किया। जाति प्रथा, वर्णाश्रम व्यवस्था, यज्ञ विधान आदि को नए सिरे से अनुमोदित करने के पीछे तुर्क, अफगान, मुगल, पठान आदि विदेशी आक्रमणकारियों और उनके धार्मिक-सामाजिक विचारों से रक्षा के प्रयासों ने वैदिक-पौराणिक संस्कृति की पुनः प्रतिष्ठा की प्रवृत्ति को नये सिरे से मजबूत कर दिया। सामंती शासक वर्ग ने अपने हितों को धार्मिक जामे में पेश करना आवश्यक समझा और मुगल शासकों ने भी धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति से इस प्रवृत्ति को अपना समर्थन प्रदान किया।

तुलसीदास की विचार-व्यवस्था और उनकी राजनीतिक चेतना उल्लिखित प्रवृत्ति के अनिवार्य अंग के रूप में विकसित हुई थी। कहना न होगा कि जनसाधारण पर ढाये जा रहे जुल्म, उनकी दुरवस्था, दरिद्रता तथा भूखे-नंगे लोगों की चीख-चीत्कार का वर्णन उन्होंने पूरी मार्मिकता और करुणा के साथ किया है। यहाँ तक कि महामारी, अकाल, गरीबी आदि की तत्कालीन वास्तविकता पूरी प्रखरता के साथ अंकित हो गई है। धार्मिक पाखंड, आडम्बर, झूठ,

मक्कारी, अनैतिकता आदि का पर्दाफाश करने में भी गोस्वामी जी ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी है। पर अपने युग के सामाजिक-राजनीतिक संकट का हल प्रस्तुत करने में वे वैदिक-पौराणिक संस्कृति के ढाँचे से बाहर निकल ही नहीं पाते। उनके पास एक ही हल है—भक्ति, राम की भक्ति। उनका तर्क है कि राम दीन दयालु है और शरणागत की रक्षा करने वाले भक्त-वत्सल और उद्धारक है। तुलसी वर्तमान यथार्थ के संकट का एक अतीतोन्मुख समाधान प्रस्तुत करने में राम कथा के सभी चरित्रों और उपाख्यानों का आदर्शीकरण करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के संपूर्ण कृतित्व के अंदर इस असंगति से उत्पन्न द्वन्द्व और तनाव की गूँज-अनुगूँज सुनी जा सकती है।

तुलसीदास ने एक ओर तो तत्कालीन परिस्थितियों का विशद निरूपण किया तो दूसरी ओर रामराज्य की परिकल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया। वे कहते हैं—

**दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं व्यापा।
सब नर करहिं परसपर प्रीती।**

चलहिं स्वधर्म निरत सुति नीती।।

सभी लोग परस्पर प्रेम से जीवन निर्वाह करते हैं तथा कोई किसी के प्रति शत्रु भाव नहीं रखता। तुलसी ने जिस राम राज्य की रूपरेखा यहां प्रस्तुत की है, उसमें सुख का आधार भौतिक समृद्धि न होकर आध्यात्मिक भावना है। राम मानवता के चरम आदर्श हैं, उनका चरित्र अनुकरणीय है।

तुलसी कहते हैं कि राम के राज्य में कोई किसी से बैर नहीं करता तथा राम के प्रभाव से विषमता नष्ट हो गई थी—

बयरु न करु काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।

सभी लोग वर्णाश्रम धर्म का पालन करते थे और वेदविहित मार्ग पर चलकर प्रेम सहित जीवन व्यतीत करते थे। उस समय धर्म अपने चारों चरणों—सत्य, शौच, दया, दान सहित प्रतिष्ठित था, पापकर्म विलुप्त हो गए थे, कोई भी व्यक्ति स्वप्न में भी पाप नहीं करता था। सभी व्यक्ति राम की भक्ति में लीन होकर स्वर्ग के अधिकारी बन गए थे—

बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।।

कोई भी अल्पमृत्यु प्राप्त नहीं करता था, सभी सुन्दर और नीरोग थे। कोई दरिद्र, मूर्ख एवं लक्षणों से हीन नहीं था। सभी लोग दंभ रहित होकर धर्म पालन में लगे रहते थे। राम के राज्य में सभी नर-नारी उदार थे, परोपकारी थे और द्विजों के सेवक थे। स्त्रियाँ भी मन, वचन और कर्म से पति का हितचिन्तन करती थीं—

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी।

एक नारि व्रत रत सब झगरी।

ते मन बच क्रम पति हितकारी।।

रामचन्द्र के राज में अपराध कोई नहीं करता था इसीलिए 'दण्ड' की आवश्यकता ही न पड़ती थी। 'जीतना' शब्द केवल मन

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिंदी साहित्य : विविध विधाएँ

कहानी : पूस की रात (प्रेमचंद)



परिचय

महान लेखक मुंशी प्रेमचंद का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के अन्तर्गत लमही ग्राम में 1880 में हुआ था। मुंशी प्रेमचंद की मृत्यु 56 वर्ष की आयु में, सन् 1936 में हुई। इन्हें प्यार से नवाबराय कहते थे, परन्तु उनके बचपन का नाम धनपतराय था। आरम्भ में उन्होंने नवाबराय के नाम से ही लेखन आरम्भ किया। शुरू-शुरू में आपने उर्दू में भी लिखा। बाद में आपने हिंदी में लेखन प्रेमचंद के नाम से ही किया। बचपन में ही पिता का साया उठ जाने से उनका जीवन काफी कष्टमय बीता। परिश्रम के बल पर इन्होंने बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। पहले स्कूल में अध्यापक रहे, बाद में पदोन्नत होकर निरीक्षक बने।

हिंदी साहित्य प्रेमचंद जी का बहुत आभारी है। आपने कहानियाँ व उपन्यास लिखे हैं। कहानियाँ आठ भागों में 'मानसरोवर' नाम से संकलित हैं। 'बूढ़ी काकी', 'संग्राम', 'हामिद', 'गम की वेदी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'नमक का दरोगा' इत्यादि अनेक कहानियाँ हैं। आपने कई प्रसिद्ध उपन्यास भी लिखे हैं। इनमें से मुख्य उपन्यास हैं—'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला', 'सेवासदन' इत्यादि। 'निर्मला' उपन्यास को दूरदर्शन ने राष्ट्रीय नेटवर्क पर 1988 में दिखलाया भी था।

प्रेमचंद जी का साहित्य समाज व कला का पूरा प्रतिनिधित्व करता है। उस समय की सामाजिक स्थिति, राजनैतिक दासता, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, गरीबों का शोषण इत्यादि इनके लेखन के मुख्य विषय रहे। आपके साहित्य में अधिकतर समाज-सुधार व राष्ट्रीय भावना के दर्शन होते हैं। सामाजिक दशा का मार्मिक चित्रण करने में आप सिद्धहस्त हैं।

प्रेमचंद की भाषा सहज, सटीक, मुहावरेदार तथा प्रभावशाली है। व्यंजना शक्ति का भी प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं पर उर्दू का भी पुट मिलता है, क्योंकि आप आरम्भ में उर्दू में लिखते थे,

बाद में हिंदी में लेखन आरम्भ किया। इनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता पात्र व परिस्थिति के अनुरूप ढल जाने की है।

'पूस की रात' कहानी किसान-जीवन से संबंधित है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि किस तरह कठोर परिश्रम के बावजूद किसान हमेशा अभावों से घिरा रहता है और कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता। लगातार शोषण से उत्पीड़ित किसान की आस्था किसानों से डगमगा जाती है। कहानी के इसी कथ्य का विश्लेषण इस इकाई में विस्तार से किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

कहानी : पूस की रात

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा—सहना आया है। लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली—तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिये हुए (जो उसके नाम को झूठा सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला—ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूंगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आँखें तरेरती हुई बोली—कर चुके दूसरा उपाय जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात में दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी

2 / NEERAJ : हिंदी साहित्य : विविध विधाएँ

चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रुपये न दूंगी-न दूंगी।

हल्कू उदास होकर बोला तो क्या गाली खाऊँ?

मुन्नी ने तड़पकर कहा-‘गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?’

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली ‘तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।’

हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकाल कर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रुपये कम्बल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी टिटुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी। हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा-क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आये थे। अब खाओ टंड, मैं क्या करूँ। जानते थे, मैं यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलायी और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी रवान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, ‘स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है।’

‘हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की टंडी पीठ सहलाते हुए कहा-‘कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो टंडे हो जाओगे। यह राँड़ पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है। उटूँ फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे। आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गरमी से घबड़ाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्मल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!’

हल्कू उठा गड्डे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हाँ जरा, मन बदल जाता है।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू-आज और जाड़ा खा ले कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूंगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिये और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी। चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसे दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिमटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर आकर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी टंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जायेंगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेतों से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने साँचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिये और उनका एक झाड़ बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिये बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा-अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँटे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अंधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूंदें टपटप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खुशबू लिये हुए आया।

हल्कू ने कहा—कैसी अच्छी महक आई जबरा! तुम्हारी नाक में भी कुछ सुगंध आ रही है? जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अंधकार के उस आनंद सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिये, मानो ठंड को ललकार रहा हो, 'तेरे जी में जो आए सो करा।' ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा—क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है? जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा—'अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?'

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।' जबरा ने पूँछ हिलायी।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चू, तो मैं दवा न करूँगा।'

जबरा ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों से देखा।

'मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लड़ाई करेगी।'

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया! पैरों में जरा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा—चलो-चलो, इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अंधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर

ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था। जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर गया। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थीं फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा—नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डालो। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगायी—जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेतों में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी—लिहो! लिहो! लिहो!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू। गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया। सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी—क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा—क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली—हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मँडैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया—मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत के डाँड़ पर आये। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मँडैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हो।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छायी थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा—अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

4 / NEERAJ : हिंदी साहित्य : विविध विधाएँ

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा—रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

कहानी का सार

प्रस्तुत कहानी प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी को लिखने का उनका मुख्य उद्देश्य उस समय के सामाजिक व राजनैतिक यथार्थ का वर्णन करना था।

देश में जमींदारी प्रथा थी। किसानों को जमीन का मालिकाना हक न था। अंग्रेजी सरकार इन जमींदारों के द्वारा लगान वसूल करती थी। फसल चाहे अच्छी हो या खराब, सरकारी खजाने में लगान जमा करना आवश्यक था। सामाजिक बंधनों से बंधा हुआ किसान अत्यन्त गरीबी से जकड़ा हुआ था। किसान अशिक्षित थे, परन्तु ईमानदार थे। कड़ी मेहनत के बावजूद भी उन्हें दो जून की रोटी नसीब न हो पाती थी। किसान तन के कपड़े व भूखे पेट की परवाह न करते हुए भी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे। फसलें इतनी अच्छी न होती थीं कि जमींदार की लूट भी सहें और किसान का पेट भी भरे। अन्य खर्चों को पूरा करने के लिए उसे सूदखोरों के चंगुल में फँसना पड़ता था।

सूदखोर मनमाना ब्याज वसूलते थे। हर तरफ शोषण ही शोषण था। एक बार लिया हुआ कर्ज सारे जीवन न उतर पाता था। कर्ज पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते थे। किसान अभावों की जिन्दगी काटता था और सूदखोर जमींदार विलासिता का जीवन व्यतीत करता था। किसानों की अशिक्षा उनकी सबसे बड़ी दुश्मन थी। वे शोषण के दुष्क्रम में फँसे हुए थे।

हल्कू भी एक ऐसा ही अभागा किसान है, जो अपनी अशिक्षा व गरीबी के कारण सूदखोरों के चंगुल में फँस गया है। उसकी सारी कमाई इन शोषकों द्वारा लूट ली जाती है। उसके पास तन ढकने को कंबल भी नहीं है। वह रात-रात भर ठंड में खेत पर रहकर फसलों की रखवाली करता है, उसकी उपज को सूदखोर व जमींदार खाते हैं। हल्कू निराशावादी हो जाता है। वह सोचता है कि जिस फसल की रखवाली करके भी उसे कुछ नहीं मिलता, तो उसके उजड़ जाने 4से उसे क्या नुकसान है। अतः वह स्वयं को नियति के हवाले कर देता है।

संदर्भ सहित व्याख्या

1. जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता है। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पूस की रात' कहानी से ली गई हैं। इस कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं। हल्कू अपने खेत में ठंड से मर रहा है। वह सर्दी से बचने के लिए जबरा को गोद में लेकर लेट जाता है। उसके तन से गंध आ रही है।

व्याख्या—जबरा को हल्कू ने गोद में चिपका लिया। उस समय कुत्ता और किसान दोनों ही स्वर्ग जैसा अनुभव कर रहे थे। हल्कू के मन में उस समय पशु व इंसान का भेद भी समाप्त हो गया था। वह कुत्ते को उतना ही प्यारा समझ रहा था, जितना अपने रिश्तेदार को। वह गरीब था, मेहनत के बाद भी वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता था। गरीबी ने ही उसे आज इस दशा में पहुँचा दिया था। वह पशु के साथ भी बराबरी का व्यवहार कर रहा था। उसको अपना मित्र बना लिया था। जबरा के साथ मित्रता ने उसके हृदय को उदार बना दिया था और कुत्ता भी और अधिक वफादार हो गया था।

विशेष—हल्कू गरीबी व ऋण के बोझ से दबा हुआ है। कुत्ते के साथ मित्रता का व्यवहार उसकी उदारता को व्यक्त करता है। प्रेमचंद ने भावप्रधान और प्रसादयुक्त भाषा का प्रयोग किया है। भाषा भावों को व्यक्त करने में सक्षम है।

2. मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' से ली गई हैं। कम्बल के लिए जोड़े हुए तीन रुपये सहना को देने के पश्चात् रात को खेत में बैठे-बैठे हल्कू के मन में अनेक विचार उठ रहे हैं—

व्याख्या—यह उक्ति किसान के जीवन की विडम्बना को व्यक्त करती है। किसान व मजदूर की मेहनत से सारा समाज लाभ उठाता है, परन्तु वह स्वयं उसका लाभ नहीं उठा पाता। वह जो कुछ कमाता है, उसे ब्याज के रूप में महाजन को भेंट कर देता है और जो ब्याज कमाते हैं, सूदखोर हैं, वे आराम करते हैं। ब्याज दिन-रात बढ़ता रहता है, कभी पूरा होने का नाम ही नहीं लेता। जो मेहनत नहीं करते केवल ब्याज पर रुपया देते हैं, वे ऐश करते हैं।

विशेष—इस उक्ति के द्वारा समाज के अन्तर्विरोध को व्यक्त किया गया है। लेखक ने इतनी बड़ी बात को सहजता से व्यक्त कर दिया है।

कथावस्तु

पूस की रात कृषक जीवन की करुण कथा कहती है। अभावों में पलने वाला किसान होड़तोड़ मेहनत करने के बाद भी अपनी रोजी-रोटी नहीं जुटा पाता। वह तो शोषणग्रस्त जीवन व्यतीत करने को बाध्य है। ऊपर से प्रकृति की मार उसे हताश कर देती है। कंपकंपाती सर्दी उसे इतना उदासीन बना देती है कि खड़ी फसल को जानवरों से नहीं बचा पाता है और सर्दी से बचाव के लिए कुत्ते को ही गले लगाने के लिए विवश हो जाता है।

कहानी का आरम्भ—हल्कू सहना (महाजन) के रुपये देने को कहता है, किन्तु उसकी पत्नी मुन्नी कहती है कि तीनों रुपये दे दिए तो कंबल कहाँ से आएगा और ठिठुरती रात में खेत की रक्षा कैसे होगी। वह फसल आने पर रुपये लौटाने की बात कहती है, किन्तु हल्कू सोच में पड़ गया, सोचा कि यदि उधारी नहीं चुकाई तो सहना झिड़कियाँ देगा, गालियाँ बकेगा, पर फिर पूस की रातें काटने की भी थी।